सेन्ट्रल जोन इंश्योरेंस एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से संबद्ध)

33, प्रभांजलि, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्ष : का. अजीत केतकर

महासचिव : का. डी. आर. महापात्र

परिपत्र क्र. : 06/2023

दिनांक : 12/08/2023

मध्य क्षेत्र के समस्त साथियों के नाम

विषय : 77वें स्वतंत्रता दिवस का संदेश, विकास के लिये शांति और एकता जरूरी

प्रिय साथियों,

हम एआईआईईए के परिपत्र क्रमांक 17/2023 दिनांक 13 अगस्त 2023 का हिन्दी अनुवाद नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं–

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ

आपका साथी

महासचिव

प्रिय साथियों ,

भारत 15 अगस्त 2023 को अपना 77वां स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए तैयार है। हम इस अवसर पर सभी बीमा कर्मचारियों और साथी नागरिकों को अपनी क्रांतिकारी शुभकामनाएं देते हैं। आजादी के 76 वर्षों में देश ने जीवन के हर क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। लेकिन इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि एकजुट रहना है जिस पर कई लोगों को इसकी विशाल विविधताओं को देखते हुए संदेह था। हमने यह भी सीखा है कि देश के जीवन और रहन–सहन को बेहतर बनाने में तेजी से प्रगति करने के लिए शांति और एकता आवश्यक है।

भारतीय उपमहाद्वीप के दो अलग–अलग राष्ट्र–राज्यों में विभाजन के साथ हमें आज़ादी मिली। इस दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन ने न केवल क्षेत्र को विभाजित किया बल्कि हमारे राष्ट्रीय आंदोलन की एकता और विविधता को भी नष्ट कर दिया। विभाजन के परिणामस्वरूप नई खींची गई सीमाओं के पार लोगों को अकल्पनीय कष्ट सहना पड़ा। विभाजन ने लूट, डकैती और हत्याओं के उस अकल्पनीय पैमाने को चिह्नित किया जो दुनिया ने कभी देखा था। सरकारी दस्तावेज़ बताता है कि संवेदनहीन सांप्रदायिक हिंसा में लगभग दस लाख लोग मारे गए। विभाजन में यकीनन सबसे बड़ा मानव प्रवास और जबरन विस्थापन भी देखा गया। सरकारी रिकॉर्ड बताते हैं कि 6 मिलियन गैर–मुस्लिम पश्चिमी पाकिस्तान से भारतीय क्षेत्रों में चले गए और 6.5 मिलियन मुस्लिम पंजाब, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के भारतीय हिस्से से पश्चिम पाकिस्तान में चले गए। इसी तरह 40 लाख गैर–मुसलमान पूर्वी पाकिस्तान से पश्चिम बंगाल चले गए और 10 लाख से अधिक मुसलमान पश्चिम बंगाल से पूर्वी पाकिस्तान चले गए। तीन समुदाय, हिंदू, सिख और मुस्लिम समान रूप से पीड़ित हुए।

यह याद रखना आवश्यक है कि सांप्रदायिक हिंसा और नफरत किस प्रकार की आपदा पैदा कर सकती है। यह इंसानों को जानवरों में बदल देता है और विभाजन के दौरान जो देखा गया वह सबसे खराब पशुता थी। ऐसी स्थिति दोबारा पैदा न हो, इसके लिए विभाजन की विभीषिका से सबक लेना जरूरी है। भारत सरकार ने 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। यदि इसका उद्देश्य नागरिकों को धार्मिक हिंसा के खतरों के बारे में जागरूक करना और नफरत की राजनीति से

मुक्त देश के लिए काम करना है, तो यह एक स्वागत योग्य कदम है। लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा नहीं है. संपूर्ण विचार यह है कि राजनीतिक लाभ हेतु समाज को और अधिक ध्रुवीकृत करने के लिए विभाजन और उसके परिणामों के लिए एक समुदाय को दोषी ठहराया जाए। इस पृष्ठभूमि में, हम उस उत्साहपूर्ण तरीके से चिंतित हैं, जिसमें एलआईसी 14 अगस्त को भारत सरकार के निर्देश पर विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के रूप में मनाने के लिए प्रदर्शनियों का आयोजन कर रही है। एलआईसी एक धर्मनिरपेक्ष संस्था है जो व्यवसाय को सुरक्षित करती है और सभी समुदाय को सेवा प्रदान करती है। इसलिए, एलआईसी के लिए इस राजनीतिक खेल का हिस्सा बनना वास्तव में दुर्भाग्यपूर्ण है।

विभाजन में ब्रिटिश, मुस्लिम लीग, हिंदू महासभा और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की भूमिका इतिहास में अच्छी तरह से दर्ज है। यह और बात है कि आज इतिहास ही दोबारा लिखा जा रहा है। इन सभी दलों की भूमिका पर विस्तार से चर्चा करने का इरादा नहीं है, इसलिए विश्लेषण संक्षिप्त है। यह सच है कि 20वीं सदी के शुरुआती वर्षों में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच गहरी फूट विकसित हो गई थी। लेकिन इसने मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा को बंगाल, सिंध और उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत में संयुक्त रूप से प्रांतीय सरकारें चलाने के लिए गठबंधन करने से नहीं रोका। मुस्लिम लीग और महासभा दोनों की विचारधाराएँ समान थीं और उन्होंने समुदायों को राष्ट्रीयताओं में बदल दिया। दोनों राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से दूर रहे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ सहयोग किया। दोनों का विचार था कि हिंदू और मुस्लिम दो अलग-अलग राष्ट्रीयताएं हैं और वे शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व में नहीं रह सकते। जहां जिन्ना की मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए एक अलग राज्य की मांग की, वहीं हिंदू महासभा एक हिंदू राष्ट्र की स्थापना करना चाहती थी। उन दोनों को औपनिवेशिक सत्ता ने अपने फायदे के लिए इस्तेमाल किया। यही वे कारक थे जिनके कारण विभाजन हुआ। विभाजन भयावह स्मृति दिवस मनाते समय नागरिकों को इनमें से प्रत्येक नेता द्वारा निभाई गई भूमिका के बारे में समझाना होगा। जबकि पाकिस्तान एक धार्मिक राज्य बन गया, हमारे राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं ने भारत को धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र बनाने के लिए प्रतिबद्ध किया। यह एक तथ्य है कि दोनों समुदायों के अधिकांश लोग विभाजन के खिलाफ थे और उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता हासिल करने में शानदार भूमिका निभाई। तब से हुई घटनाओं ने प्रदर्शित किया है कि धर्म एकीकरण करता नहीं है और जो राज्य धर्म के आधार पर बना था वह 25 वर्षों के भीतर विघटित हो गया और पूर्वी पाकिस्तान एक स्वतंत्र राष्ट्र-राज्य बन गया और उसका नाम बांग्लादेश हो गया।

आज भारत में एक बार फिर बड़े पैमाने पर हिंसा देखने को मिल रही है. मणिपुर वस्तुतः गृहयुद्ध में है। सांप्रदायिक हिंसा ने हरियाणा के समाज को तोड़ दिया है। इन दोनों स्थानों पर, यदि राज्य सहभागी नहीं है, तो अनुपस्थित है। सुप्रीम कोर्ट को मजबूरन कहना पड़ा कि उसे मणिपुर सरकार और पुलिस पर कोई भरोसा नहीं है. मणिपुर पुलिस और असम राइफल्स आमने-सामने हैं। पूरे देश का माहौल नफरत की राजनीति से भरा हुआ है. जाति और लैंगिक अत्याचार बदस्तूर जारी हैं। भारत की विविधता को एकरूपता में बदलने का प्रयास किया जा रहा है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बहु-धार्मिक, बहु-भाषाई पहचान और संस्कृति की बहुलता के लिए मान्यता और सम्मान ने भारत को एकजुट रखा है। इन बहुलताओं पर हमले से देश की एकता और अखंडता को नुकसान पहुंचेगा। विभाजन के सबक ने हमें सिखाया है कि नफरत और सांप्रदायिक हिंसा विभाजन पैदा करती है और अलगाववाद को जन्म देती है। इसलिए, भारतीय लोगों को विभाजनकारी ताकतों के साथ-साथ नफरत की राजनीति से लड़कर देश की एकता की रक्षा के लिए सतर्क रहना होगा।

77वें स्वतंत्रता दिवस पर, आइए हम भारत को एक महान राष्ट्र के रूप में बनाने के लिए सभी समुदायों को एकजुट करने का काम करें। आइए हम राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के शहीदों और उन लाखों लोगों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें जिन्होंने विभाजन का दर्द सहा। आइए हम असमानताओं को कम करने और सभी भारतीयों के लिए सम्मानजनक जीवन जीने की स्थिति बनाने के लिए काम करने के लिए फिर से समर्पित हों।

अभिवादन के साथ,

आपका साथी

(श्रीकांत मिश्रा)

महासचिव